



सच्चिदानंद परमानंद मेहेर बाबा विज्ञानंद



मेहेर करुणा सागर बाबा

संदेश

- लाखों विश्वों के इस अनन्त स्थूल लोक का केन्द्र पृथ्वी है, इस रूप में कि वह बिन्दु है, जिस पर समस्त मानवीय चेतना युक्त आत्मायें प्रतिवर्धन के मार्ग को प्रारम्भ करने के लिए आती हैं
- यदि तुम्हारा हृदय पूजा में नहीं लगा, तो ऐसी पूजा न करना अच्छा है। दिखावे अथवा रस्म की भावना से यान्त्रिक रूप से की गई कोई भी प्रार्थना केवल एक स्वांग है।

दुश्मन मित्र है!

“यदि लोग तुम से बेईमान करते हैं तुम्हारे लिए मुसीबतें पैदा करते हैं और तुम्हें धोखा देते हैं फिर भी तुम ईमानदार और पवित्र बने रहते हो तो तुम बहुत भाग्यवान हो क्योंकि ये तुम्हें ठगने वाले तथा कथित तुम्हारे दुश्मन, तुम्हारे मित्र हैं। ये तुम्हारी कमजोरियों एवं पापों को धोकर तुम्हारे ईश्वर की ओर जाने वाले मार्ग को साफ कर देते हैं।”

मेहेर चालीसा

(केशव नारायण निगम द्वारा रचित)

हरि! परमात्मा! अल्लाह!

अहूरमज्द! गॉड! यजदानहू!

जय 'मेहेर' साहिबे-जमाँ

जय जय निराली शान हू!!

जय भक्त उनके मस्त उनके

खींच लाते जो उन्हें भूलोक पर!

धूल उनकी सिर लगाऊँ, हिये लाऊँ

प्रेम के उनके सहारे 'मेहेर' को मैं पाय जाऊँ।

जय बाबा! जय अन्तर्यामी! जय अनन्त! जय जगदाधार!

पूरण बह्म सनातन स्वामी, अखिल विश्व के पालनहार। 1।

जय सौम्य मूर्ति! जय शुभ, पावन! जय मंगलकारी!

भक्त जनन की आस एक, जय जय अनन्त लीलाधारी। 2।

युग के राही धर्म सिपाही, जय तप के भण्डार हरे!

दरस मात्र से गति सुधरे अरु, क्षार होंहि अघपुन्ज खरे। 3।

निराकार साकार रूप, जय, नर-नारायण दोऊ!

भीतर बाहर सरग पतारन, तुम्हें छोड़ नहीं कोऊ ।4।
 भक्तन के जय"बाबा! जय-जय बाबाजान के 'मेहेरबान' ।
 उपासनी के भण्डारी जय! सुर-कुल-पंकज भानु ।5।
 सिद्ध जनन के शहंशाह, जय दिव्य सनातन ज्योति!
 निर्विकार जय धर्म मूर्ति! जय शान्ति अखण्ड विभूति ।6।
 तुम सन प्रीति करे से प्रानी, तुमं समान हुयी जाही ।
 जनम-जनम के पातक छूटें, अंत मेहेरपद पाहीं ।7।
 व्याकुल मानव को हो तुम, अब पार लगाने आये ।
 देश जाति अरु धर्म रंग का, भेद मिटाने आये ।8।
 जगती को दिखलाने शक्ती, भक्ती की फैलाने महिमा ।
 प्रकट हुये शीरीमाई से, सतजीवन की लेकर गरिमा ।9।
 मैं गाऊँ क्या तुम्हारी महिमा, शेष शारदा पार न माहीं ।
 तुम हो अनन्त महिमा अनन्त, अन्त तुमहिं मैं सबहि समाहीं ।10।
 मर्यादा के राखन हित तुम, मर्यादा पुरुषोत्तम बन आये ।
 होकर अनन्त व्यापी दिगन्त, मर्यादा में बँधकर आये ।11।
 तुमहिं बने गिरधर मीरा के, सूरदास के श्याम ।
 नरसी के थे सामलिया तुम, तुलसीदास के राम ।12।
 'केशव' के तुम प्रियतम बाबा, हिय में आन बिराजे हो ।

अमित कृपादृष्टि सेवक पर, मन-मन्दिर में राजे हो ।13।
 तुमहिं परस जन्मन को पापी, आज निहाल भयो रे।
 तव पद-पंकज पाकर पावन, त्रय सन्ताप दह्यो रे ।14।
 चाहूँ नही जगत का वैभव, ऋद्धि सिद्धि नहि चाहूँ।
 दुनियाँ दौलत माल खजाना, तुमहिं पाय दुकराऊँ ।15।
 चाहूँ सदा सलोनी मूरत, यहै देख हरषाऊँ।
 इसको ध्याऊँ इसको गाऊँ, इस पर बलि-बलि जाऊँ ।16।
 श्रवण सुनै तो नाम तिहारो, रसना तुव गुण गावै।
 छोड़ जगत के फन्दे मनुवाँ, एक तुमहिं को ध्यावै ।17।
 बसौ मोर नैनन में ऐसे, तुमहिं छोड़ नहिं और लखाई।
 सुरति एक रट मेहेर नाम की, दूजो और साई ।18।
 जब जब जनम धरौ धरनी में, सगुण रूप को पाऊँ।
 सेवा भक्ति पूरी करके, निरगुण माहिं समाऊँ ।19।
 मैं चरनन को दास तिहारो, निसदिन यहै मनाऊँ।
 करो कृपा ऐसी ठाकुरजू, तुव सेवा को पाऊँ ।20।
 जब जब धरनि माहिं तुम आओ, अधम अधारन स्वामी।
 मोहिं अधम को भूल न जाना, हौं तुम्हार अनुगामी ।21।
 तुव सेवा भक्ति दर्शन हित, मैं हूँ नर तन पाऊँ।

पाइ प्रकाश तुम्हारो प्रभुवर, लीला देख जुड़ाऊँ ।22 ।
 तुलसी की मैं पाऊँ भक्ति, मीरा की वह मरती पाऊँ
 झूम-झूम- कर नाचूँ सन्मुख, प्रेम के आँसू बहाऊँ ।23 ।
 भूल जगत सुध तन मन हूँ, श्रीचरण टेक रह जाऊँ ।
 तुम्हीं साध्य आराध्य बनो मम, और कुछ नहीं चाहूँ ।24 ।
 सूरदास की पाऊँ रसना, लीला तुव नित गाऊँ ।
 निबल जान जो बाँह छुड़ाओं, हिये बाँध रह जाऊँ ।25 ।
 कबीरदार की मिलै फकीरी, निसदिन अलख जगाऊँ ।
 जतन जतन से ओढ चदरिया, जस की तस धर जाऊँ ।26 ।
 देह तजौं तो काज तिहारे, गती जटायू पाऊँ ।
 शान्तिमयी तुव गोद मिले, फिर धाम तिहारे जाऊँ ।27 ।
 शबरी के मैं बेर खिलाऊँ, साग बिदुर का लाऊँ ।
 खाओ प्रभुजी उसी प्रेम से, बारी तुम पर जाऊँ ।28 ।
 तरी अहिल्या गणिका सदना, तरेउ अजामिल भागी ।
 बाल्मीकि हू पार भये, जिन 'मरा-मरा' रट लागी ।29 ।
 ऐसहि भाग्य मिले मोहि बाबा, एक यहै वर चाहूँ ।
 वन निशाद चरणोदक पाऊँ, युग-युग हेतु जुड़ाऊँ ।30 ।
 ड्यूढी का मैं बनूँ पहरूवा, निसदिन गश्त लगाऊँ ।

अंजनि सुत सम करूँ चाकरी, तुव दर्शन नित पाऊँ।31।
 देव दनुज मानव ऋषि मुनि सब, द्वार तिहारे आवैं।
 नारदमुनि वीणा से पावन, नाम तिहारों गावैं।32।
 तूही बह्मा तूही विष्णु, शिव अनादि तू ही मैं जानूँ।
 तूही इन्द्र बृहस्पति तूही, त्रिभुवन नाथ तुम्ही को मानूँ।33।
 जय सृष्टि के कर्ता धर्ता जय, प्रतिपालक त्रिभुवन के।
 दीनबन्धु हे दयासिन्धु! जय भक्त तुम्हारे तुम भक्तन के।34।
 जय प्रेम मूर्ति! जय शान्तिमूर्ति, जय दिव्यमूर्ति हे बाबा।
 जय पतितपावन भक्तवत्सल। जय शक्ति पुञ्ज हे बाबा।35।
 जय अधम-उधारन विपद-विदारन, तेज पुंज अवनाशी।
 पावन मूर्ति पूर्ण मर्यादा, जय घट-घट के वासी।36।
 ऐसी कृपा होइ मो ऊपर, विनय करौं कर जोरी।
 मन-मन्दिर मम छोड़ न जाना, शरण पड़ा हूँ तोरी।37।
 अटल रहे मम श्रद्धा भक्ति, अटल रहे यह प्रेम की ज्वाला।
 जरत-जरत यामे जर जाऊँ, बुझे तभी यह पावन ज्वाला।38।
 जो ज्वाला प्रहलादहिं दीन्हीं, भनै सन्त सब कोई
 गिरि से गिरेउ अग्नि में डारेउ, साँच को आँच न होई।39।
 ध्रुव सम निष्ठा अचल मिले, जिन साक्षी है ध्रुवतारा।
 अमर मिलन हो प्रियतम तुमसे, छूटे यह जग सारा।40।

परवरदिगार प्रार्थना

(मेहेरबाबा द्वारा प्रदत्त)

हे परवरदिगार!

सबके राखनहार और सबकी रक्षा करने वाले!

तुम्हारा कोई आदि नहीं है, और न तुम्हारा
कोई अन्त है तुम अद्वैत हो, तुम तुलना से पर हो।

और तुम्हारा पार कोई नहीं पा सकता है।
तुम्हारा कोई रंग और रूप नहीं है, तुम
आविर्भाव से रहित हो, और तुम गुणातीत हो।

तुम अपार हो और अगाध हो, कल्पना और
धारणा से परे हो, शाश्वत और अनश्वर हो।

तुम अखण्ड्य हो, और दिव्य नेत्रों के सिवाय
और किसी प्रकार से तुम्हे कोई नहीं देख सकता है
तुम्हारा अस्तित्व सदैव था, तुम सदैव रहोगे।

तुम सर्वत्र हो, तुम हर वस्तु में हो, और तुम
हर जगह से परे तथा हर वस्तु से परे भी हो।
तुम आकाश में हो और पाताल में हो। तुम
व्यक्त हो और अव्यक्त हो, तुम सब लोकों पर हो,
और समस्त लोकों से परे हो।

तुम तीनों भुवनों में हो, और तीनों भुवनों से
परे भी हो। तुम अगोचर हो और स्वतंत्र हो।

तुम सृष्टि के रचने वाले हो, स्वामियों के
स्वामी हो, समस्त मनों और हृदयों के ज्ञाता हो, तुम
सर्वशक्तिमान हो और सर्वव्यापी हो।

तुम अनन्त ज्ञान हो, अनन्त शक्ति हो और
अनन्त आनन्द हो।

तुम ज्ञान के महासागर हो, सर्वज्ञ हो, अनन्त

ज्ञान रखने वाले हो, तुम भूत, वर्तमान, भविष्य के ज्ञाता
हो, और तुम स्वयं ज्ञान हो।

तुम पूर्ण दयामय हो और सतत परहितकारी हो।

तुम आत्माओं की आत्मा हो, और अनन्त
गुणों से सम्पन्न एक परमात्मा हो।

तुम सत्य, ज्ञान, और परमानन्द की त्रिमूर्ति हो।

तुम सत्य के मूल, प्रेम के महासागर हो। तुम सनातन सत्ता हो,
ऊँचों में सबसे ऊँचे हो, तुम प्रभु और परमेश्वर हो, तुम परब्रह्म हो,
और परात्पर परब्रह्म भी हो! तुम परब्रह्म परमात्मा हो, अल्लाह हो,
इलाही हो, यजदान हो, अहूरमज्द हो, और प्रियतम ईश्वर हो।
तुम्हारा नाम एज़द, अर्थात् एकमेव पूज्य है।



प्रायश्चित्त प्रार्थना

(मेहेरबाबा द्वारा प्रदत्त)

हे असीम दया के निधि, प्रभुराज!

हम अपने सब पापों के लिये पश्चात्ताप करते हैं। हर एक विचार के लिये जो असत्य, अनुचित या गन्दा था, हर एक बोले हुये शब्द के लिये जिसे बोलना हमें उचित न था, और हर एक कर्म के लिये जिसे करना हमें उचित न था। स्वार्थ से प्रेरित हर एक कर्म, शब्द तथा विचार के लिये, तथा द्वेष प्रेरित हर एक कर्म, शब्द और विचार के लिये हम पश्चात् करते हैं।

विशेष कर हर एक कामुक विचार तथा क्रिया के लिये, ऐसे हर एक वचन के लिये जिसको हमने पूरा नहीं किया, सब असत्य वचनों के लिये, और सभी निन्दा पाखण्ड, दम्भ या लोगों के पीछे उनके दोष बताने के लिये हम अनुताप करते हैं।

और खासकर, दूसरों का नाश करने वाले हर एक कर्म के लिये, दूसरों को दुःख देने वाले हर एक शब्द तथा कर्म के लिये, तथा दूसरों पर दुःख गिरने की इच्छा करने

के लिय हम अनुताप करते हैं।

हे प्रभुराज! आप हम पर असीम दया करके हमारे किये हुये पापों को क्षमा कीजिये। और वैसे ही आपकी मर्जी के अनुसार विचार करने में, बोलने में तथा कार्य करने में जो हमारी असमर्थता सदा रहती आई है, उसको भी क्षमा कीजिये,

यही हमारी आपसे प्रार्थना है।

बाबा के प्रेमियों एवं मण्डली के लिये प्रार्थना

(मेहेरबाबा की लिखाई हुई)

प्रियतम् परमात्मा! हमारी ऐसी सहायता कर कि

हम तुझसे अधिकाधिक प्रेम करें,

और अधिक और अधिक और फिर भी उससे भी

अधिक प्रेम करें,

जब तक कि हम तुझ में मिलकर एक हो जाने के

पात्र बन जायें,

और तू हम सब की ऐसी सहायता कर कि

हम अंत-अंत तक बाबा का दामन दृढ़ता से पकड़े रहें।

आरती

(मेहेरबाबा द्वारा प्रदत्त)

बुझावे नार जहेल्लतनी, ए करं कुदरतने फरमां तु।
छे लगी आस भक्तों ने, के बखशे नूरे इमां तु॥

ऐ मेहेरबाबा! तुम प्रकृति (कुदरत) ऐसा आदेश दो कि
हमारे अज्ञान की आग बुझ जाये। हम भक्त जन तुझसे ऐसी
आशा लगाये हैं कि तुम हमें सत्य का सौन्दर्य प्रदान कर दो।
अया मुरशद मेहेरबाबा, चरण पर तुझना धरिए सर।
खुदाना जातथी वाकेफ, थई बेठो मेहेरबां तु॥

हे सद्गुरु मेहेरबाबा आपके चरणों पर हम मस्तक
रखते हैं। कारण कि आप परमात्मा से एक हो करके मेहेरबाबा
रूप में विराजमान हो।

तुं छे मालिक हकीकतनू, तुं आशिकभी ने आरेफभी।
तुं छे दरियाए वहेदत, मारेफतनो होई तूफां तु॥

तू यथार्थ का स्वामी है तू प्रेमी भी है और प्रियतम भी।
तू ऐक्य का सागर है और आध्यात्मिक ज्ञान का तूफान

अर्थात् भरपूर ज्ञान है।

हमो रहेरवने ने अए सालेक, बख्शजे ज्ञान ईजदनु।
के तुं परमात्मा ज्ञानी छे, ने मुख्तारे इरफां तु॥

हे सद्गुरु हम मार्ग के तत्वों को ईश्वरीय ज्ञान प्रदान
कर दे, क्योंकि तुम परमात्मा हो, ज्ञानी हो और ज्ञान के
मालिक हो।

खुदाना प्रेमनो प्यालो, पिलावी मस्त हमने कर।
छे तुजपर जान सदके, साकीया आपिदे पयमां तु॥

तू हमें ईश्वरीय प्रेम का ऐसा प्याला पिला दे कि हम
प्रेम में मस्त हो जायें।

हमारी नाव भर दरिए, तरावे तो हमें तरिए।
हमारा नाखुदा अय मेहेर, बाबा छे निगेवां तु॥

हमारी नाव बीच भँवर में है वह डगमगा रही है। ऐ
हमारे माझी और रक्षक मेहेरबाबा हमको पार लगा दो।

आरती

(भाऊ कलचुरी कृत)

हुआ लहर से ही है जिसकी, सृष्टि का निर्माण ।

उसकी दैवी अनन्तता का, कैसे हो अनुमान ।।

आदि सचेतन, शान्ति निकेतन, नमो ब्रह्म आओ ।

मेहेर प्रभु आरती अपनाओ ।।

प्रेम दीप में हिये जलाऊँ निबिड़ अंधेरा मिटता पाऊँ

अपना सब कुछ तुम्हें चँढ़ाऊ तुम मूझको सरसाओं ।

मेहेर प्रभु आरती अपनाओ ।

जीवन की हर सांस हमारी बन जाये प्रभु गति तुम्हारी

हे करुणाकर लीलाधारी तुम करुणा बरसाओ ।

मेहेर प्रभु आरती अपनाओ ।

बने आरती जीवन मेरा आदी-अन्त का लय हो घेरा

खुले नयन और दिखे सबेरा तुम मुझ में छा जाओ ।

मेहेर प्रभु आरती अपनाओ ।

आरती

(मधुसूदन कृत)

जहाँ कल्पना शब्द न पहुँचे ऐसे अपरम्पार ।
‘नेति नेति’ वेद पुकारे महिमा तोरि अपार ॥
दिव्य सनातन! परम दया घन! हे जगदोद्धारो ॥

मेहेर मन आरती स्वीकारो ।
धूप दीप चन्दन चरचाना ।
भोग लगाना फूल चढ़ाना ।
तुम्हारा ही तुमको लौटाना ।
काहे बढ़ाई करूँ ॥१॥

सकल निधि के तुम कारण हो ।
सकल विश्व तारनहारे हो ।

तुम सम और नही तुम्ही हों
हे सत् अवतारों ।।2।।
सकल चराचर तुम्हरी माया ।
माया भी तो तुम्हरी छाया ।
तुम्हारा अन्त न कोई पाया ।
तुम हो अनन्त खरो ।।3।।

अपने को जब जो नहिं जाने ।
महिमा तुम्हारी क्या पहिचाने ।
जो कुछ भी कहते अनजाने ।
गुण गाते तुम्हरो ।।4।।

सीमा नाही तुम्हरी कृपा को ।
क्या कोई दे सकता प्रभु तुमको ।
भीख तुम्हीं दो प्रेमी जनों को ।
नित्य तुम्हें सुमिरों ।।5।।

डॉ. सी. एल. दीवान द्वारा रचित

मेहेर की समाधि पर, करते जो दर्शन ।
मिटै दुःख दारिद, सुख का हो अर्जन ॥

मन में जो रखता, दृढ़ विश्वास ।
बाबा की समाधि पर, पूरण होती आस ॥
मेरे मेहेर को कोटि कोटि समर्पन । मेहेर.....

वचन न बाबा का, कभी झूठा होगा ।
हृदय भाव निर्मल, गर सच्चा होगा ॥
मेरे मेहेर को जीवन है अर्पन । मेहेर.....

मोहब्बत प्रदाता, जमाने का माली ।
मेरे मेहेर की, महिमा निराली ॥
मेरे मेहेर को संस्कार हैं तर्पन । मेहेर.....

सृष्टि में देखे हैं, अजब तेरे नजारे ।
सफर मेरे जीवन का, वस तेरे सहारे ॥
मेरे मेहेर को पाने में लगे वर्सन । मेहेर.....

हर युग अवतार में, संत मझधार में।
मेहेर तू आता है, सदगुरुओं से नाता है॥

त्रेता युग राम काल में, साधु प्रेमी अधर्मों के जाल में।
मेहेर तूने धनुश उठाया है, राक्षसों का किया सफाया है॥

मेहेर तू आया है.....।

द्वापर कृष्ण काल में, योग ज्ञान मझधार में,
भगवत गीता रचाया है ब्रह्म जीव अरुमाया है॥
मेहेर तू आता है।.....।

गौतम बुद्ध काल में, अंगुलिमाल के जाल में।
तन तप कर बोध पाया है, यह नश्वर तन सब माया है॥
मेहेर तू आता है.....।

ईसा भेड़ चराते हैं, जड़ चेतन में गाते हैं।
सूली से प्रेम जगाते हैं, क्रिसमिस डे मनाते हैं॥
मेहेर तू आता है.....।

मुहम्मद मक्का का उजियारा हैं मदीना में दैवीय कार्य पसारा है।
पाक कुरान से अमृत सारा है, इस्लाम धर्म स्वीकार है॥
मेहेर तू आता है.....।

कलियुग माहि मेहेर आयो, सत जीवन की गरिमा लायो।
धर्म रंग जाति किया किनारा, मेहेर प्रेम किया विस्तार।।
मेहेर तू आता है.....।

मेहराबाद में दैवीय कार्य पसारा, मौला बाबा ने किया था इशारा है।
अनंत में लीन दिव्य समाधि है, विज्ञान, बंधन खोल चेतना साधी है।।
मेहेर तू आता है.....।

मैं सिखाने नहीं जगाने आया हूँ तेरा तन-मन सोया उठाने आया हूँ।
असामां पर उठाने आया हूँ हम भाई भाई है बताने आया हूँ।।
मेहेर तू आया है.....।

मैं सनातन एक्य परमेश्वर हूँ मेरे सभी धर्म एकेश्वर हैं।
सभी मानव मेरे पुत्र हैं ऊँचा-नीचा रंग भेद विमुक्त है।
मेहेर तू आता है.....।

उद्धारक सकल सृष्टि का स्वामी हूँ मैं पिता-तुम पुत्र सहगामी हूँ।
चिन्ता न करो प्रेम का धागा है, दीवान अति आनंद उमंग अनुरागा है।।
मेहेर तू आता है.....।

मुक्ति मुक्ति प्रदाता मेहेर बाबा ।
भक्ति भक्ति प्रदाता मेहेर बाबा ।

तू है अनन्त तू है दिगन्त, पार तेरा कोई न पाओ रे ।
तू है भगवन्त, तू है विरंचि, आनन श्री शशि जीत लियो रे ॥
शक्ति शक्ति प्रदाता मेहेर बाबा ॥

मुक्ति मुक्ति प्रदाता मेहेर बाबा ।
भक्ति भक्ति प्रदाता मेहेर बाबा ।

तू है नन्दन वन, तू है अनन्तरम, नन्दन कानन दिव्यधाम है ।
तू है आत्म प्रसन्न, तू है विच्छिन्न, यही दिव्य विधान है ।
इच्छा शक्ति प्रदाता मेहेर बाबा ।

मुक्ति मुक्ति प्रदाता मेहेर बाबा ।
भक्ति भक्ति प्रदाता मेहेर बाबा ।

तू है इंगिला, तू हैं पिंगला तू सुषम्ना में समाया है ।
तू है संकल्प तू है विकल्प, ऐसा 'दीवान' को बताया है ।
प्रज्ञा शक्ति प्रदाता मेहेर बाबा ।

मुक्ति मुक्ति प्रदाता मेहेर बाबा ।
भक्ति भक्ति प्रदाता मेहेर बाबा ।

अपने प्रेमियों के लिए मेहेर बाबा के उपदेश

1. हृदय की शुद्धि और मन की शान्ति के लिये पवित्र और स्वाभाविक संसारिक जीवन व्यतीत करो परन्तु याद रखो कि यह सब बाबा का है।
2. किसी भी बात की चिन्ता मत करो और सभी परिस्थितियों में प्रसन्न रहने का प्रयत्न करो।
3. तुम्हें अपने लिये ही जीवित न रहकर दूसरों के लिए भी जीना चाहिए।
4. जब भी तुम स्वयं को सुखी तथा दुःखी अनुभव करते हो तब सोचो—“बाबा की मर्जी है कि मैं दुःखी रहूँ।”
5. अपनी समस्त कठिनाइयों का सामना बहादुरी से और प्रसन्नता पूर्वक करो और मेरी प्रेम मयी ‘नजर’ तुम्हारे ऊपर होगी।
6. मेरा प्रचार करने के बजाय, मेरे प्रेम प्रसार का कार्य अपने अच्छे व्यवहार से करो।
7. मैं अपने दैवी अधिकार से कहता हूँ कि जो भी व्यक्ति अंतिम स्वांस लेते समय मेरा नाम स्मरण करेगा वह मेरे पास आवेगा। इसलिए अभी से सदैव सोने से पहले और जागने पर मेरा नाम स्मरण करो।

— अवतार मेहेर बाबा

मेहेर बाबा के उपदेश

रूका हुआ मन ईश्वर है।

क्रियाशील मन मनुष्य है।

धीमा हुआ मन मरत (ईश्वरीय-नशे में) है।

ईश्वर सर्वत्र है और सब कुछ करता है।

ईश्वर हमारे अन्दर है और सब कुछ जानता है।

ईश्वर हमसे परे है और सब कुछ है।

एकमात्र ईश्वर है।

भक्ति प्रियतम को जलाती है।

प्रेम प्रेमी को जलाता है।

भक्ति प्रियतम की कृपा की खोज करती है।

प्रेम प्रियजन के लिए प्रसन्नता की खोज करता है।

भक्ति प्रियतम पर बोझ डालती है।

प्रेम प्रियतम के बोझ को उठाने की चाह करता है।

भक्ति माँगती है। प्रेम देता है।

प्रेम द्वैत की दुनियाँ में, ईश्वर की एकता का प्रतिबिम्ब है।

यह समृष्टि के समस्त महत्व की संरचना करता है।

अपने हृदय में ये शब्द लिख लो,

ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ सत्य नहीं है।

ईश्वर के लिए प्रेम के अतिरिक्त और किसी का महत्व नहीं है।

चाहे इसे आशीर्वाद के रूप में लो,
या इसे एक परीक्षा के रूप में लो—
जो कुछ घटित होता है, सर्वोत्तम के लिए घटित होता है.

सब मार्ग मेरे हैं,
और अंततः सब मुझ पर पहुँचाते हैं।
किन्तु मुझ तक आने का अल्पतम मार्ग
“स्वत्व—विनाशक प्रेम की पथ—हीनता” है।

मैं कभी खामोश नहीं हूँ, मैं शाश्वत रूप से बोलता हूँ।
वह आवाज जो आत्मा की गहराई में सुनी जाती है।

मेरी आवाज.....

ईश्वर—प्रेरणा की, अन्तर्ज्ञान की, मार्ग दर्शन की आवाज।
मैं बोलता हूँ।

उनके द्वारा जो उस आवाज के लिए ग्रहणशील हैं.....

एक वस्तु की अभिलाषा करो,

एक वस्तु के लिए व्याकुल होओ।

एक वस्तु की अभिलाषा और प्रतीक्षा करो जो लाखों अन्य
अभिलाषाओं को मार देगी।

प्रियतम से मिलन की अभिलाषा करो।

मैं वह दैवी प्रियतम हूँ, जो प्रेम किये जाने योग्य है,

क्योंकि मैं प्रेम हूँ। मुझे समझने का प्रयास मत करो,

मेरी गहराई अथाह है। मात्र मुझे प्रेम करो।

मेरा संदेश सदैव दैवी प्रेम का रहा है।

और सदैव दैवी प्रेम का रहेगा।।

सब कुछ मेरा है सिवा मेरे स्वयम् के,
जो मुझे प्रेम करते हैं।

ऊँचे से ऊँचा।

मुझे प्रेम करो, मुझे प्रेम करो, मुझे प्रेम करो,
और तुम मुझे पा लोग।

मैं वही पुरातन पुरुष हूँ। सब लोग मेरे पास आओ।

चिन्ता मत करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ।

मेरे प्रेम का महासागर तुम्हारा है

तुम्हारा हृदय भरने के लिये।

मेरे प्रेम को गहराई से पियो और प्रसन्न रहो।

अपना यथाशक्ति कार्य करो और शेष मुझ पर छोड़ दो।

तब चिन्ता मत करो, प्रसन्न रहो, मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।

एक बार तुम उड़ने के लिए अपने पंख खोलते हो

तो तुम्हे राजहंस की तरह सीधे उड़ना चाहिये।

गौरेया की तरह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर मत उड़ो,

अन्यथा रास्ते में तुम्हे बहुत सी वस्तुएं विचलित कर देंगी

और यह यात्रा लम्बी है।

मेरे पास देने के लिये केवल प्रेम है और सब कुछ

जो मैं चाहता हूँ वह प्रेम है।

जो वस्तुएं वास्तविक हैं वे मौन में दी और ली जाती हैं।

मेहेर बाबा कहते हैं :-

मैं और ईश्वर एक हैं.....इसलिये केवल मेरा चिन्तन करो और निरन्तर मेरा नाम लो। जितना अधिक तुम मेरे बारे में सोचोगे, उतना ही अधिक तुम अपने लिये मेरा प्रेम अनुभव करोगे।

मेरा चिन्तन करो, अपनी सब परीक्षाओं में प्रसन्न रहो और मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम्हारी सहायता कर रहा हूँ। समस्त रोगों का इलाज सतत और सम्पूर्ण हृदय से मेरा स्मरण करा है। सदैव मेरा चिन्तन करो, चाहे तुम कुछ भी कर रहे हो, तब क्रमशः तुम अनुभव करोगे कि यह मैं हूँ जो तुम्हारे द्वारा सब कुछ कर रहा हूँ। मेरे प्रेमी के लिये सर्वोत्तम पथ सम्पूर्ण हृदय से मेरा इतना अधिक स्मरण करना है जितना कोई कर सके.....और शेष सब मुझ पर छोड़ देना है। उनको स्मरण करो, उनका नाम दुहराते रहो। बाबा का नाम लेना उन्हें स्मरण करना है और उन्हें, किसी भी प्रकार स्मरण करना, एक प्रकार से उनका नाम लेना है।

प्रकाशित साहित्य

- ❖ तीन हाथ
- ❖ ज्योतिष एक खोज
- ❖ ईश्वर एक खोज
- ❖ यंत्रोपनिषद
- ❖ संभवानि युगे-युगे
- ❖ मृत्यु का क्षण कौन रोक सकता है।
- ❖ ज्योतिष ब्रह्माण्ड
- ❖ मेसेज ऑफ मेहेर बाबा
- ❖ चलता रहा है चलता रहेगा
- ❖ मेहेरांजलि
- ❖ 21 वीं सदी की भविष्य वाणियां
- ❖ अतंतता का सितारा
- ❖ मेहेर वाणी
- ❖ अनंत पथ
- ❖ भृगु संहिता एक खोज
- ❖ मेहेर भजनावली
- ❖ जीवन-मूल्य
- ❖ करुणा सागर मेहेर बाबा



डॉ० सी. एल. दीवान

चेयरमैन

- ❖ अवतार मेहेर बाबा अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र
- ❖ विहारीपुरा, जिला टीकमगढ़ (म.प्र.)
- आखिल भारतीय ज्योतिष शोध केन्द्र

-:: पत्राचार हेतु पता ::-

कार्यालय- 1059, इन्द्र प्रस्थ नगर, नगरिया कालोनी, झाँसी

फोन (0510) 2444675 मो 9415070430